भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक—साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : १२

सोमवार ३० दिसम्बर, '६८

अन्य पृष्ठों पर

हमारा काम मतदाता का विवेक जगाना··· —रुद्रभान १५७

दो बड़ों का समाजवाद —सम्पादकीय १५५

विनोबा के सान्निध्य में··· —रामचन्द्र राही १५६

आन्दोलन के समाचार १५८

जहाँ बुद्धि का काम है, वहाँ बुद्धि चलनी चाहिए। लेकिन जहाँ बुद्धि टूटती है, वहाँ श्रद्धा की जरूरत है। जहाँ बुद्धि चलती है, वहाँ श्रद्धा का लाना गलत है। आँख के क्षेत्र में कान को पूछना, और कान के क्षेत्र में आँख को पूछना गलत है। ध्वनि कैसी है, यह कान बतायेगा। उसमें आँख अड़ंगा नहीं लगा सकती। वैसे ही बुद्धि और श्रद्धा के अलग-अलग विषय हैं। बुद्धि के विषय में श्रद्धा आती है, तो गलत है। श्रद्धा के विषय में बुद्धि आ ही नहीं सकती, वह टूट जाती है। —विनोबा

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी–१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

चुनाव में महत्त्व पक्ष का या व्यक्ति का ?

मतदाताओं को उम्मीदवारों का विचार देखना चाहिए, पक्ष नहीं। उम्मीदवारों के विचार से भी अधिक महत्त्व उनके चारित्र्य को देना चाहिए। जो व्यक्ति चारित्र्य-संपन्न होता है, उसे कोई भी स्थान क्यों न दिया जाय, वह अपनी योग्यता साबित करता है। उससे गलती हो जाय, तो भी हर्ज नहीं है। मेरा खयाल है कि जिस व्यक्ति का चारित्र्य ठीक नहीं है, वह राष्ट्र की उत्तम सेवा नहीं कर सकता। इसलिए यदि मैं मतदाता बनूँ तो उम्मीदवारों की सूची से सच्चरित्र व्यक्तियों को चुन लूँगा और फिर उनके विचार समझ लूँगा।

मतदाताओं को यदि अपनी पसन्द का उम्मीदवार नहीं मिलता है, तो उनको अपना मत देना ही नहीं चाहिए। ऐसी परिस्थिति में मत न देना ही मतदान है।

इस बारे में यह आपत्ति की जाती है कि यदि अच्छे मतदाता अपनी ओर से किसीको चुनते नहीं हैं, तो गलत लोग गलत उम्मीदवारों को चुन लेंगे। कुछ हद तक यह बात सही है। लेकिन मान लीजिए, कहीं पर सभी उम्मीदवार शराबी हैं, तब अच्छे मतदाताओं का एक समूह मतदान से अछूता रहता है, और वे उम्मीदवार अपने ही ढंग के लोगों द्वारा मत प्राप्त करते हैं, तो विधान-सभाओं में उनका वजन थोड़े ही पड़नेवाला है ? यह ठीक है कि संख्या की दृष्टि से उनकी राय का मूल्य है, लेकिन कौंसिल में उनके भाषणों और दृष्टिकोण का कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अलावा, जान-बूझकर जिन्होंने अपना मत नहीं दिया है, उसका भी प्रभाव होता है।

मतदाताओं को एक बार यदि योग्य उम्मीदवार नहीं मिला, तो दूसरी बार अच्छे व्यक्ति को खोजने का वे प्रयत्न करेंगे और उसे चुनकर लायेंगे। इस प्रकार वे अपने मतदाता-संघ का स्तर ऊँचा उठाते हैं। जो राष्ट्र प्रगतिशील होता है, उस राष्ट्र के लोग राष्ट्रीय बातों को समझते हैं। अपेक्षा यह है कि वे अपने क्षेत्र के राजनैतिक वातावरण को शुद्ध करें और शुद्ध रखें। सुशिक्षित और विचारवान मतदाताओं को इतना ध्यान रखना चाहिए कि कभी-कभी ऐसी स्थिति पैदा होती ही है, जब कि उन्हें अपना मत देने से इनकार करना पड़ता है।

—मो० क० गांधी

'नवजीवन' : १६ मई, १९२०

हमारा काम मतदाता का विवेक जगाना : अच्छे उम्मीदवार का नाम बताना नहीं

www.vinoba.in

पटना में १८ दिसम्बर '६८ को दिन में ढाई बजे बिहार भूदान-यज्ञ कमिटी के सभा-भवन में बिहार के जिलादानी क्षेत्र के कार्यकर्ताओं की एक चर्चा-गोष्ठी आयोजित हुई। चर्चा-गोष्ठी के लिए निम्नलिखित विषय निर्धारित थे :

१. जिलादान के बाद ग्रामसभा के गठन, ग्रामदान-पुष्टि के लिए उठाये गये कदमों—जैसे, भूमिहीनों के लिए जमीन निकालने, ग्रामकोष स्थापित करने और ग्राम-शान्ति-सेना का गठन करने में हुई प्रगति की जिलावार जानकारी।

२. प्राप्त अनुभव के आधार पर आगे के लिए ऐसी व्यूह-रचना करना, जिससे ग्रामदान-पुष्टि-सम्बन्धी कार्यक्रम तेजी से आगे बढ़ सकें।

३. जिलादान के बाद ग्रामदान-पुष्टि के कार्यक्रम जिला सर्वोदय-मण्डल के माध्यम से सम्पन्न हों या जिला ग्रामस्वराज्य समिति के द्वारा, इस पर विचार।

४. मध्यावधि चुनाव में सर्व सेवा संघ द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव के अनुसार मतदाता-शिक्षण का कार्यक्रम असरदार तरीके से करने के उपायों पर विचार।

चर्चा-गोष्ठी में बिहार के जिलादानी जिलों के लगभग ५० कार्यकर्ता शरीक हुए थे। सर्वश्री जयप्रकाश बाबू, वैद्यनाथ बाबू और आचार्य राममूर्तिजी भी इस गोष्ठी में उपस्थित थे।

प्रारम्भ में बिहार ग्रामदान-प्राप्ति समिति के मंत्री श्री कैलाश बाबू ने मतदाता-शिक्षण-सम्बन्धी अब तक के कार्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि इसके लिए पिछले दिनों पटना के नागरिकों की एक बैठक बुलायी गयी थी। उस बैठक में सभी राजनैतिक दलों के नेताओं को बुलाया गया था। पूर्व-निर्धारित कार्यक्रमों के कारण कांग्रेस के नेता बैठक में शरीक नहीं हो सके, इसलिए २३ दिसम्बर को पुनः बैठक हुई, जिसमें आचार-संहिता का निर्धारण हुआ।

श्री कैलाश बाबू के बाद आचार्य राममूर्तिजी ने चर्चा-गोष्ठी में सर्व सेवा संघ द्वारा स्वीकृत मतदाता-शिक्षण सम्बन्धी प्रस्ताव पढ़कर सुनाया और कहा कि पटना में जो कुछ काम हुआ है वैसा ही काम अन्य जिलों में भी होना चाहिए। आचार्य राममूर्तिजी ने कहा कि नागरिकों को दल-मुक्ति की तैयारी करनी है। वे दलों को ध्यान में रखने के बदले उम्मीदवार के गुण को ध्यान में रखकर वोट दें तो यह दल-मुक्ति की दिशा में पहला कदम होगा। इस बार के चुनाव में विभिन्न दलों के अच्छे उम्मीदवार चुने जायेंगे तो आज की राजनीति और सरकार की हवा बदलेगी। अच्छे उम्मीदवारों के चुने जाने के बाद आगे चलकर नागरिकों को अपना उम्मीदवार चुनने में सफलता मिलेगी। आचार्य राममूर्तिजी ने कहा कि मतदाता-शिक्षण का काम अच्छे ढंग से चलाने के लिए निम्नलिखित दिशाओं में प्रयत्न करना है—

१. मतदाताओं को क्या करना है और क्या नहीं करना है, इसका स्पष्ट निर्देश देने के लिए एक अपील तैयार हो।

२. सभी उम्मीदवारों को एक मंच पर इकट्ठा करके सभा का आयोजन किया जाय। कई सभाएँ न हो सकें तो कम-से-कम निर्वाचन-क्षेत्र में ऐसी एक सभा हो, ऐसा प्रयास किया जाय। जिला-स्तर पर तो ऐसी सभा होनी ही चाहिए।

३. श्री जयप्रकाशजी का चुनाव-सम्बन्धी एक भाषण रेकार्ड करा लिया जाय, ताकि चुनाव-सभाओं में उसका व्यापक उपयोग किया जा सके।

आचार्य राममूर्तिजी जब अपना निवेदन कह चुके तो दरभंगा के श्री रामप्रताप ठाकुर ने प्रश्न उठाया कि क्षेत्रों में नागरिक हमसे पूछते हैं कि हम अपना वोट किस उम्मीदवार को देंगे? वे कहते हैं कि सबसे अच्छे उम्मीदवार का चुनाव करना उनकी बुद्धि के लिए कठिन काम है। इस शंका का समाधान करते हुए राममूर्तिजी ने कहा कि गुप्त मतदान लोकतंत्र का शील है। मैं किसे वोट दूँगा या मैंने किसे वोट दिया, यह बताने में गुप्त मतदान का शील समाप्त हो जाता है। अच्छे उम्मीदवार का नाम बताना हमारा काम नहीं, मतदाता का विवेक जगाना हमारा काम है। एक बार दिल से दल निकल जाय तो अच्छे उम्मीदवार की पहचान करना बहुत मुश्किल नहीं रह जाता।

राममूर्तिजी ने बताया कि १८ नवम्बर '६८ के 'भूदान-यज्ञ' के परिशिष्ट 'गाँव की बात' के अंक में मतदाता-शिक्षण-सम्बन्धी आवश्यक सुझाव प्रकाशित किये गये हैं। उसमें बताया गया है कि (१) मतदाता पैसे के लोभ या डंडे के भय से वोट न दें, (२) चुनाव-प्रचार में बच्चों का इस्तेमाल न हो। (३) चुनाव के कारण गाँव की एकता पर कोई आघात न हो इसकी सावधानी; क्योंकि गाँव की एकता टूटेगी तो गाँव की सामूहिकता की भावना भी टूटेगी। (४) पक्षमुक्त और प्रतिष्ठित नागरिकों की निरीक्षक टोली (विजिलेंस टीम) बने, जो यह देखे कि चुनाव-सम्बन्धी आचार-संहिता का पालन हो रहा है या नहीं।

चर्चा-गोष्ठी में अपना विचार प्रकट करते हुए श्री जयप्रकाश बाबू ने कहा कि राजनैतिक पक्षों के नेता पार्टी से आज स्वयं निराश हो रहे हैं। चुनाव में आम लोगों की कोई खास दिलचस्पी नहीं रह गयी है, न किसी पार्टी के लिए गहरा खिंचाव ही दीखता है। श्री जयप्रकाशजी ने सभी लोक-सेवकों का ध्यान इस ओर आकर्षित करते हुए कहा कि आप लोग अब तक चुनाव के काम से अलग रहते रहे हैं। कुछ लोगों ने कहीं-कहीं दूसरों की मदद भी की, पर कुल मिलाकर आप लोग इस काम से अलग ही रहे हैं। मध्यावधि चुनाव के लिए समय बहुत कम बचा है, इसलिए यदि जिलादानी क्षेत्रों के कार्यकर्ता इस बीच पुष्टि के काम में लगेंगे तो मतदाता-शिक्षण का काम ढीला पड़ जायेगा। इन दोनों कामों में मतदाता-शिक्षण का अभी विशेष महत्त्व है; इसलिए हम सब इसमें पूरी एकाग्रता से जुट जायँ।

अन्त में तय हुआ कि श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, आचार्य राममूर्ति, श्री रामनन्दन सिंह ग्रामदानी जिलों की यात्रा कर मतदाता-शिक्षण का काम आगे बढ़ाने का प्रयास करें।

—रुद्रभान

www.vinoba.in

सम्पादकीय

दो बड़ों का समाजवाद

अभी हाल में देश के दो बड़ों ने, जो राजनीति में एक-दूसरे से कोसों दूर हैं, समाजवाद की व्याख्या की है। एक ने कहा है :

'समाजवाद का अर्थ है कि सबको भोजन मिले। भोजन जीवन का आधार है, इसलिए कोई ऐसा न रहे जिसे भरपूर भोजन न मिले। यही समाजवाद है।' —*कामराज (कांग्रेस)*

इस व्याख्या के अनुसार समाजवाद = भोजन।

दूसरी व्याख्या है : 'समाजवाद का अर्थ है कि हर एक को काम मिले जिसे वह मेहनत से करे और अपने भोजन, आवास और वस्त्र के लिए कमाई करे।' —*राजगोपालाचारी (स्वतंत्र)*

इस व्याख्या के अनुसार समाजवाद = काम।

अगर राजाजी का जोर काम पर है तो श्री कामराज यह नहीं चाहेंगे कि भोजन सबको मुफ्त बाँटा जाय। मान लिया जा सकता है कि वह भी यही चाहते होंगे कि सबको काम मिले और काम से इतना दाम मिले कि पेट भर सके। इसलिए एक के काम तथा दूसरे के भोजन में अन्तर नहीं। अन्तर दूसरा है। राजाजी के अनुसार अन्तर समाजवाद के साध्य का नहीं है साधनों का है।

राजाजी के समाजवाद में राष्ट्रीयकरण के लिए स्थान नहीं है, जो दूसरे समाजवादियों का मुख्य नारा रहा है। वह नहीं चाहते कि सरकार पहले टैक्स आदि के द्वारा दौलत इकट्ठा करे, फिर बाँटने के उपाय सोचे। इसके विपरीत दूसरे समाजवादी अधिक-से-अधिक साधनों के राष्ट्रीयकरण द्वारा लोगों को भोजन देने की बात कहते हैं। लेकिन राजाजी का भरोसा इस बात में है कि उत्पादक उद्योगों का संचालन कुशल लोगों के हाथों में सौंपा जाय। उनके अनुसार कुशल वे ही हो सकते हैं जिनका उन उद्योगों में अपना हित है, क्योंकि हितवाले ही मुनाफे को उद्योग के विकास और विस्तार में लगा सकते हैं! राजाजी मानते हैं कि यह सरकार का काम नहीं है कि जनता पर कड़ा टैक्स लगाये, और वोट लेने के लिए लोककल्याण के नाम में खर्च करे, और अन्त में सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी को ही मार डाले। राजाजी श्रमिकों का सुख इसीमें देखते हैं कि पूँजीवालों के हित के साथ श्रमवालों के हित का सामंजस्य होता चले, क्योंकि मजदूर और मालिक के मेल से मुनाफा होता है, और मुनाफे से ही उद्योग-धन्धों का विस्तार होता है। इसीमें सबका सुख है।

श्री राजाजी और श्री कामराज की राजनीति आपस में कोसों दूर है। एक का दल दूसरे के दल का घोर विरोधी है। अर्थनीति, की दृष्टि से एक का नारा है 'फ्री इकानामी' (खुले बाजार की अर्थ-नीति) और दूसरे का है 'मिक्स्ड इकानामी' (मिश्रित अर्थनीति, जिसमें सरकार की प्रधानता है)। हाँ, इतना है कि सिद्धान्त का नाम चाहे जो हो, अमर्यादित मुनाफाखोरी का समर्थन न श्री राजाजी करेंगे, और न श्री कामराज। मुनाफा दोनों में है, लेकिन मर्यादित। राजाजी कहेंगे कि जब उत्पादक बाजार की खुली होड़ में उतरते हैं तो मुनाफे पर अपने आप सीमा लग जाती है, जब कि श्री कामराज के लोककल्याणकारी राज्य में मुनाफे पर मर्यादा लगाने की जिम्मे-दारी सरकार पर है। खुले बाजार पर भरोसा करनेवाली अर्थनीति पूँजीवादी कहलाती है। उसमें समाजवाद नहीं है। वह ज्यादा-से-ज्यादा उदार पूँजीवाद कही जा सकती है, लेकिन है पूँजीवाद ही। मिश्रित नीति में भी समाजवाद क्या है? क्या यही कि उसमें बहुत-से अधिकार सरकार के हाथ में केन्द्रित हैं? क्या सरकारवाद से ही समाजवाद बन जाता है? उसे सरकारी कल्याणवाद भले ही कह लें, लेकिन बुनियाद में वह भी रहेगा पूँजीवादी ही। चाहे उदारवादी पूँजीवाद हो, चाहे कल्याणकारी मिश्रितवाद; समाजवाद न यह है, न वह। अनुभव यही बता रहा है कि दोनों पूँजीवाद हैं, मुखौटे उनके चाहे जो हों।

सबको भरपेट भोजन देने के नाम में हमारी राजनीति नये-नये नारे निकालती रहती है, और अपने हर नये नारे पर समाजवाद का मोहक रंग चढ़ाती है। किसी नारे में निजी पूँजीवाद का अंश अधिक हो, या सरकारी पूँजीवाद (स्टेट कैपिटलिज्म) का, सबको भरोसा सरकार और बाजार की ही शक्ति में है, समाज की नहीं।

भारत के समाजवाद का आधार न बाजार में है, न सरकार में। उसका आधार है समाज और उसकी शक्ति। समाज की शक्ति न तो राजाजी के खुले बाजारवाद से जगेगी, न श्री कामराज के मिश्रित-वाद से, और न साम्यवादियों के सरकारवाद से। जरूरत है इन सबसे भिन्न समाजाधारित समाजवाद की धारा बहाने की। ग्रामदान यही चाहता है। वह चाहता है कि गाँव अपने दायरे में स्वयं अपना 'बाजार' हो, और स्वयं अपनी सरकार हो। स्वायत्त ग्रामसभा और स्वाश्रयी अर्थनीति का यही अर्थ है। गाँव की रक्षा न श्री राजाजी के समाजवाद में है, और न श्री कामराज के।

बेशक हम गरीब हैं। हमारे लिए भात ही भगवान है। लेकिन क्या इसका अर्थ यह है कि जब दुनिया—आज की प्रगतिशील दुनिया—मुक्ति के नये क्षितिज पर पहुँचना चाहती है तो हमारे सामने रोटी लक्ष्य के रूप में पेश की जाय? क्या विज्ञान के इस जमाने में भी रोटी समस्या है? समस्या इसलिए है क्योंकि बाजार और सरकार की शक्तियाँ विज्ञान को जन-जन के पास पहुँचने नहीं दे रही हैं। एक बार हमारे गाँवों को अपनी मूलभूत एकता की शक्ति पहचानने का अवसर मिल जाय तो वे नये-से-नये विज्ञान को बुला सकते हैं, और हर ग्रामीण को भरपूर काम और भरपेट भोजन, दोनों दे सकते हैं। रोटी को मुक्ति का विकल्प बनाने का अर्थ है समाजवाद के नाम में घोर सरकारवाद का समर्थन, जिसका आगे चलकर अर्थ है तानाशाही।

भारत का समाजवाद वही होगा जो सर्व से शुरू होगा, तथा सर्व द्वारा और सर्व के लिए चलेगा। बड़ों के समाजवाद में केवल सर्व की बात होगी, लेकिन सर्व की शक्ति या मुक्ति नहीं।•

www.vinoba.in

° विनोबा भावे कहाँ के ?
° 'यूनिवर्सिटी पीस ब्रिगेड'
° प्रयाग में 'पेशी-आन्दोलन'
• आचार्यकुल की शक्ति

'विनोबा भावे कहाँ के हैं, दक्षिण के ?' बगल में बैठे एक सुशिक्षित-से दीखनेवाले तरुण ने अपनी बगल में बैठे अपने साथी से पूछा।

'नहीं, महाराष्ट्रीयन हैं।' उसने सहजता से जवाब दिया।

इलाहाबाद हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के चौराहे पर स्थापित की गयी राजर्षि पुरुषोत्तमदास-टंडन की कांस्य-प्रतिमा का अनावरण करने के लिए मंच पर विनोबा के पहुँचने में अभी कुछ मिनटों की देर है, चौराहे की हर राह पर भीड़ उमड़ रही है, और चूँकि मंच का कार्यक्रम अभी शुरू नहीं हुआ है, इसलिए लोग आपस की विविध वार्ता में मशगूल हैं।

मैं सोच रहा हूँ कि जय जगत् का मंत्रोच्चार करनेवाले विनोबा कितनी सहजता से भारतीय भी न रहकर इन मित्रों की निगाहों में महाराष्ट्रीयन बन गये ? शायद यह इस बात की अभिव्यक्ति है कि भारत के नागरिकों ने 'भारतीयता' के 'पावर' वाला चश्मा उतारकर रख दिया है, और किसी-न-किसी प्रदेशीय, जातीय, साम्प्रदायिक, पक्षीय 'पावर' का 'चश्मा' पहन लिया है। शायद इसीलिए भारतीय और जागतिक विस्तार चश्मे की शक्ति और सीमा में समा नहीं पाता। और इसके साथ ही यह भी कहना पड़ेगा कि स्वराज्य के बाद, इतने दिनों के प्रयत्नों के बाद शायद नेताओं ने जनता को इस दिशा में प्रशिक्षित करने में पूर्ण सफलता पायी है।

खैर, समय हो गया है, और अब विनोबाजी मंच पर आ चुके हैं। बिखरी हुई भीड़ अत्यधिक सिमट आयी है। वेद-मंत्रोच्चार और स्वागतगान तथा स्वागत के कुछ औपचारिक रस्मों के बाद विनोबा बोलते हैं :

"सूक्ष्म-प्रवेश के बाद स्थूल क्रियाएँ कम हो गयी हैं, लेकिन इस स्थूल कार्यक्रम में आया, क्योंकि वचन दे चुका था। आज उससे मुक्ति मिल रही है।

"प्रयाग ने याज्ञवल्क्य से लेकर आज तक भारत को बड़े-बड़े नेता दिये हैं। उनमें महामना, नेहरू और टंडनजी इस युग में सर्वोपरि हैं।

"टंडनजी ने विविध क्षेत्रों में देश की सेवा की—स्वराज्य के पहले, और स्वराज्य के बाद भी। हिन्दी की उन्होंने विशेष सेवा की, लेकिन यह गलत खयाल है कि वे उर्दू-विरोधी थे। मैंने खुद उनके भाषण सुने हैं कई बार। उनकी भाषा में उर्दू के सुन्दर शब्द प्रयोग में आये थे, फारसी में तो वे बोल भी सकते थे। उनका आग्रह नागरी का था, और मैं इससे सहमत हूँ। सोचने की बात है कि हिन्दी से अधिक नागरी से देश की एकता में मदद मिलेगी। नागरी लिपि से अधिक वैज्ञानिक लिपि मैंने दुनिया में पायी नहीं।

"दक्षिण के लोग हिन्दी-विरोधी नहीं। हिन्दीवाले आलसी हैं, दूसरी भाषा सीखते नहीं। आलस्य रखकर आग्रह रखते हैं और व्यर्थ का राष्ट्राभिमान पालते हैं। हम अति आग्रह छोड़ेंगे तो दक्षिण की प्रतिक्रिया कम होगी।

"प्रतिमाएँ हम खड़ी करते हैं, उससे महान लोगों का अनादर करने की हमारी आदत बनती है। यह नहीं होता कि चले जा रहे हैं, रास्ते में किसी महान व्यक्ति की प्रतिमा पड़ी, तो पलभर के लिए रुककर उनका ध्यान कर लिया।"

कार्यक्रम पूरा हुआ। टंडनजी की आदमकद कांस्य-प्रतिमा अनावरित होकर सबकी निगाहों के केन्द्र में खड़ी है। विनोबा चारों तरफ एक फेरा लगाकर पुष्पार्पण करके चले जाते हैं।

× × ×

आज ही सुबह सुरेशराम भाई के प्रयास से इलाहाबाद विश्वविद्यालय में 'यूनिवर्सिटी पीस ब्रिगेड' की रचना विनोबा के समक्ष हुई है। उपकुलपति महोदय तथा विश्वविद्यालय-छात्र संघ के अध्यक्ष सहित विश्वविद्यालय से सम्बद्ध अन्य कई लोग भी उपस्थित थे। अशान्ति के मौसम में शान्ति की चाह स्वाभाविक है। बाबा ने राजनीतिक दलों की घुसपैठ को समाप्त करने और शिक्षण की स्वतंत्र शक्ति तथा हैसियत विकसित करने की सलाह दी।

× × ×

आज दूसरे दिन प्रदेशदान के आन्दोलन को गति देने और संयोजित करने के लिए बनायी गयी संचालन-समिति की बैठक है बाबा के समक्ष। सोच रहा हूँ कि शक्ति और क्षमता को बढ़ाने तथा काम को वेगवान बनाने के लिए कोई ठोस योजना बनेगी। लेकिन यहाँ तो शुरू हो रहा है 'पेशी-आन्दोलन' बाबा के पास बैठे कुछ वरिष्ठ लोग विभिन्न जिलों से आये हुए कार्यकर्ताओं के नाम पुकारते हैं, बाबा के पास बुलाते हैं उनको उनके बारे में कुछ सुनाते हैं, कुछ 'कबूल' कराते हैं, और कुछ सहमे हुए, कुछ झिझके हुए विनयपूर्वक कार्यकर्ता लोग आते हैं, हाथ जोड़कर शीश झुकाकर जो कुछ कहा जाता है, उसे सुनकर, स्वीकार कर कभी कुछ प्रतिवाद के साथ भी अपनी जगह जाकर बैठ जाते हैं। मुझे यह दृश्य बहुत अजीब-सा लगता है। बाबा से कार्यकर्ताओं का प्रत्यक्ष परिचय हो, उनको उनके काम की जानकारी मिले, और बाबा की प्रेरणा से कार्यकर्ता अपने अन्दर कुछ दृढ़ता और संकल्प का भाव लेकर वापस जायँ, काम में पहले से अधिक वेग से जुटें, यह एक बात है, लेकिन यह आरोपित और कुछ हद तक प्रभावों के दबाव में कबूल करानेवाली बात कुछ समझ में नहीं आती। इस परिस्थिति और मनःस्थिति में किये गये संकल्प से कहीं-न-कहीं आत्मशक्ति स्खलित होती है, चेतना कुण्ठित होती है।

मुझे याद आती है बलिया की बात। जिलादान-समारोह के अवसर पर जिले के एक प्रमुख आदमी ने बाबा के सामने निश्चित अवधि में जिलादान पूरा कर डालने का

संकल्प लिया। इस संकल्प के बाद शायद बाबा से प्राप्त प्रेरणा को स्थायित्व देने के लिए उन्होंने चाहा कि बाबा के साथ उनका एक फोटो लिया जाय। उन्होंने मुझे एक घंटे तक सारे काम छोड़कर अपने साथ इन्तजार कराया कि अब आप हमारे फोटो ले लीजिए। अब सुना है कि उन्होंने 'जिलादान का संकल्प' किसी फाइल में दबाकर आलमारी में रख दिया है, और मध्यावधि चुनाव में तकदीर आजमा रहे हैं।

थोड़ी धृष्टता के साथ, लेकिन नम्रतापूर्वक मैं कहना चाहता हूँ कि हमें इस पद्धति पर विचार करना चाहिए।

बाबा कार्यकर्ताओं को क्रान्ति की चार प्रेरणाएँ समझाते हैं: स्वार्थ-प्रेरणा, समाज-प्रेरणा, युग-प्रेरणा और ईश्वरीय प्रेरणा। और कहते हैं कि "हम जो भी काम करते हैं, वह किस प्रेरणा के अनुकूल है, यह देखना है। युग-प्रेरणा काम कर रही है। वही बाबा को भी हिला-डुला रही है। हमको विश्वास है कि भगवान ने हमको अपना औजार बनाया है, हम छोटे लोग हैं, हमसे वह बड़े काम लेना चाहता है। हमें उसका औजार बनकर युग-प्रेरणा के अनुकूल काम करते जाना है।"

× × ×

शाम को आचार्यकुल की बैठक में बाबा समझाते हैं: "नीचे से जनशक्ति, और ऊपर से विद्वत्जन-शक्ति खड़ी हो तो सही दिशा मिलेगी।

"यह भारतीय संस्कृति है कि यहाँ विद्वानों और ज्ञानियों पर सत्ता का अंकुश नहीं हो सकता, सत्ता पर अंकुश होना चाहिए ज्ञानियों का और विद्वानों का। आचार्यकुल से वह शक्ति हमें प्रगट करनी है।"

आचार्यकुल की इस गोष्ठी में हिन्दी साहित्य के दो मनीषी कवि महादेवी वर्मा और सुमित्रानन्दन पंत ने भी भाग लिया। आप दोनों ने आचार्यकुल के संगठन में अपना पूरा सहयोग दिया। इलाहाबाद में आप लोगों के सहयोग से आचार्यकुल की शक्ति प्रकट होगी, और पूरे देश को प्रेरणा और दिशा मिलेगी, ऐसी आशा बँधती है।

—रामचन्द्र राही

सेवाग्राम में गांधी-जन्म-शताब्दी शिविर-शृंखला आयोजित

राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति की जन-संपर्क उपसमिति की ओर से गांधीजी के सेवाग्राम आश्रम में गत २ अक्तूबर से गांधी-जन्म-शताब्दी शिविर-शृंखला का आयोजन हो रहा है।

२ अक्तूबर, '६९ तक पूर्ण होनेवाले दस-दस दिवसीय इन २४ शिविरों में सामूहिक प्रार्थना, ग्रामीण भाइयों के साथ कार्य, वार्तालाप, वाद-विवाद, कताई, खेलकूद, गांधी-कुटी के सम्मुख सर्व-धर्म-प्रार्थना, सांस्कृतिक कार्यक्रम, गांधीजी पर चित्र व देशभक्ति के गीतों का गायन तथा सामुदायिक जीवन मुख्य है।

शिविर प्रत्येक माह की दिनांक १ व १५ को प्रारम्भ होकर दिनांक १० व २४ को पूर्ण होते हैं। भाग लेनेवाले शिविरार्थियों को पाँच रुपये प्रवेश-शुल्क देना होता है। इन शिविरार्थियों को भारतीय रेलवे ने सेवाग्राम जाने हेतु किराये में विशेष रियायत की सुविधा प्रदान की है। विस्तृत जानकारी के लिए मंत्री, जन-सम्पर्क उपसमिति, राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति, ६, राजघाट कालोनी, नयी दिल्ली–१ से संपर्क करें। (सप्रेस)

खादी और ग्रामोद्योग राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं

इनके सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिए

पढ़िये

खादी ग्रामोद्योग (मासिक)

प्रकाशन का चौदहवाँ वर्ष।
विश्वस्त जानकारी के आधार पर ग्राम विकास की समस्याओं और सम्भाव्यताओं पर चर्चा करनेवाली पत्रिका। खादी और ग्रामोद्योग के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योगीकरण की सम्भावनाओं तथा शहरीकरण के प्रसार पर मुक्त विचार-विमर्श का माध्यम।
ग्रामीण धंधों के उत्पादनों में उन्नत माध्यमिक तकनालाजी के संयोजन व अनुसंधान-कार्यों की जानकारी देनेवाली मासिक पत्रिका।

वार्षिक शुल्क : २ रुपये ५० पैसे
एक अंक : २५ पैसे

जागृति (पाक्षिक)

प्रकाशन का बारहवाँ वर्ष।
खादी और ग्रामोद्योग कार्यक्रमों सम्बन्धी ताजे समाचार तथा ग्रामीण योजनाओं की प्रगति का मौलिक विवरण देनेवाला समाचार पाक्षिक। ग्राम-विकास की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करनेवाला समाचार-पत्र।
गाँवों में उन्नति से सम्बन्धित विषयों पर मुक्त विचार-विमर्श का माध्यम।

वार्षिक शुल्क : ४ रुपये
एक प्रति : २० पैसे

(संपादक—जगदीश नारायण वर्मा)

हिन्दी और अंग्रेजी में समानांतर प्रकाशित

अंक-प्राप्ति के लिए लिखें

"प्रचार निर्देशालय"

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन, 'ग्रामोदय'

इर्ला रोड, विलेपार्ले (पश्चिम), बम्बई–५६ एएस

आन्दोलन के समाचार

पुष्पराजगढ़ तहसील में ४० ग्रामदान

शहडोल, १० दिसम्बर। मध्यप्रदेश गांधी-स्मारक निधि और प्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा संचालित गांधी-जन्म-शताब्दी ग्रामस्वराज्य शिविर शृंखला का उन्नीसवाँ शिविर यहाँ हाल में ही सम्पन्न हुआ। परिणामस्वरूप ४० ग्रामदान प्राप्त हुए। शिविर एवं पदयात्राओं में जिले के सर्वोदय-सेवकों, अध्यापकों आदि ने भाग लिया।

सरगुजा जिले में १०१ नये ग्रामदान

अम्बिकापुर, १५ नवम्बर से २१ नवम्बर तक की विनोबा-यात्रा के पश्चात् ७ प्रखण्डों—अम्बिकापुर, बतौली, मेनपाट धौरपुर, राजपुर, शंकरगढ़ और बलरामपुर—में आयोजित ग्रामदान-विचार-शिविरों और पदयात्राओं के फलस्वरूप १०१ नये ग्रामदान मिले हैं।

यह उल्लेखनीय है कि आगामी २६ जनवरी गणतंत्र-दिवस तक जिलादान-प्राप्ति के लक्ष्य की दिशा में उक्त पदयात्राओं का आयोजन किया गया था। इसमें सर्वोदय समिति, गांधी-निधि, भूदान बोर्ड, सर्वोदय मण्डल तथा छत्तीसगढ़ संभाग के लगभग ६० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया—इसके अतिरिक्त सम्बन्धित प्रखंडों के चुने हुए शिक्षकों, ग्रामसेवकों, पंचायत-सचिवों, पटवारियों तथा सरपंचों ने भी हिस्सा लिया। (सप्रेस)

नीमका थाना में ग्रामदान-तूफान अभियान प्रारम्भ

पिछले ९ दिसम्बर को राजस्थान में प्रदेशदान-अभियान के प्रारम्भिक चरण के रूप में नीमका थाना में ग्रामदान-अभियान शुरू हो गया। इस अवसर पर आयोजित समारोह का उद्घाटन किया डा० दयानिधि पटनायक ने। प्रदेश के वरिष्ठ नेता सर्वश्री गोकुल भाई भट्ट और रामेश्वर अग्रवाल ने भी कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए प्राणपण से तूफान में लग जाने की प्रेरणा दी।

भरतपुर में ग्रामदान-गोष्ठी

प्रदेशदान-अभियान को गति देने के लिए आयोजित ग्रामदान-गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए प्रखर चिंतक श्री सिद्धराज ढड्ढा ने ग्रामदान को देश की नयी रचना की बुनियाद बताते हुए गांधीजी की कल्पना के स्वराज्य की रचना में जी-जान से लगने का आह्वान किया। इस अवसर पर भरतपुर के जननेता मा० आदित्येन्द्र ने ग्रामस्वराज्य को स्थापना को ही शान्तिपूर्ण समाज-रचना का आधार बताया।

हवेली खड़गपुर में तरुण शान्ति-सेना शिविर

दिनांक २१ दिसम्बर से २५ दिसम्बर तक हवेली खड़गपुर (मुंगेर) में जिले के सभी कालेजों एवं स्थानीय विद्यालयों के छात्रों एवं शिक्षकों का तरुण शान्ति-सेना शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में २५ शिविरार्थी एवं ५ विशिष्ट अतिथियों ने भाग लिया। गांधी-चित्र प्रदर्शनी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के समावेश से शिविर का आकर्षण बढ़ गया था। स्थानीय जनता खासी अच्छी तादाद में भाग लेने आती रही। शिविरार्थियों ने श्रमदान के कार्यक्रम द्वारा क्षेत्र की जनता से प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया। शिविर का संचालन राजेन्द्र श्रीकृष्ण उच्च विद्यालय के प्रा० श्री रामचरित्र सिंह द्वारा बड़ी लगन और निष्ठा से सम्पन्न हुआ।

आजमगढ़ में तहसील-दान

आजमगढ़ जिले की लालगंज तहसील के मेहनगर और तरवा प्रखण्डों में ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का संकल्प हस्ताक्षर-अभियान तूफानी गति से चला रहा है। उपरोक्त दोनों प्रखण्डों की ४१ न्यायपंचायतों में जिले के सभी खादी एवं रचनात्मक कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और ग्रामनेताओं ने तीन-तीन, चार-चार की टोलियों में बँटकर पूरे क्षेत्र में काम किया। यह स्मरण रहे कि लालगंज तहसील के ठेकमाँ और लालगंज प्रखण्डों का प्रखण्डदान पहले ही पूरा हो चुका था। अब मेहनगर और तरवा के प्रखण्डदान के बाद लालगंज तहसील के सभी प्रखण्डों का प्रखण्डदान पूरा हो गया। और इस प्रकार लालगंज तहसील-दान संपन्न हुआ। —मेवालाल गोस्वामी

मीरजापुर की दुद्धी तहसील का दान बाबा को प्रयाग में समर्पित

विवरण···

कुल जनसंख्या	: १,४४,३७२
ग्रामदान में शामिल	: १,१५,५११
कुल भूमि काश्त में	: १,१०,३८४ एकड़
ग्रामदान में शामिल	: ६५,२५१ ,,
कुल प्रखण्ड	: ३
ग्रामदान में शामिल	: ३
कुल गाँव	: २९९
ग्रामदान में शामिल	: २५७

—देवतादीन मिश्र

उत्तर प्रदेश में २० दिसम्बर '६८ तक कुल ग्रामदान : १०,५५६। प्रखण्डदान : ६३। जिलादान : २।

कानपुर में विचार-गोष्ठियाँ

विगत ७ और ८ दिसम्बर '६८ को श्री सिद्धराज ढड्ढा के सान्निध्य में 'व्यापारी समाज की स्थिति और सामाजिक दायित्व', तथा 'श्रमिक आन्दोलन की दिशा और दायित्व,' इन विषयों पर चर्चा-गोष्ठियाँ गांधी-प्रतिष्ठान केन्द्र द्वारा आयोजित की गयीं। गोष्ठियों में नगर के प्रगतिशील व्यापारी और प्रमुख श्रमिक नेताओं ने भाग लिया।

चौथा अखिल भारतीय शान्ति-सेना प्रशिक्षक शिविर सम्पन्न

पिछले २५ नवम्बर '६८ से १५ दिसम्बर '६८ तक वाराणसी में आयोजित अखिल भारतीय शान्ति-सेना प्रशिक्षक शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर में ४५ प्रशिक्षकों ने भाग लिया, जो देश के १४ प्रदेशों से आये हुए थे। शिविर में 'शान्ति और क्रांति' विषय पर विधिवत अध्ययन का क्रम चला और देश के प्रमुख चिन्तकों एवं विचारकों के इन विषयों पर भाषण भी हुए।

फुलिया भगत के प्रयास : सन् १९६८ में

११४७ मील की पदयात्रा करके हरियाणा के ३८७ गाँवों में ग्रामस्वराज्य का संदेश पहुँचाया और रु०१४८४-१२ की साहित्य-बिक्री की।

मध्यावधि चुनाव के अन्तर्गत शराब के सेवन तथा बिक्री की रोकथाम की माँग

www.vinoba.in

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् के महामंत्री श्री रूपनारायण ने चुनाव-आयुक्त श्री एस० पी० सेन वर्मा से अनुरोध किया है कि वह, जिन-जिन राज्यों में मध्यावधि चुनाव होनेवाले हैं, उनमें चुनाव की तिथियों से कम-से-कम एक सप्ताह पूर्व शराब की बिक्री तथा उसके सार्वजनिक प्रयोग पर प्रतिबन्ध लगाने का आवश्यक आदेश जारी करें, जिससे चुनाव में भाग लेनेवाले उम्मीदवार मतदाओं को शराब पिलाने का प्रलोभन देकर उन्हें पथभ्रष्ट न कर सकें।

अखिल भारतीय नशाबन्दी परिषद् का एक शिष्टमण्डल इस सम्बन्ध में शीघ्र ही चुनाव-आयुक्त से मिलकर उपरोक्त सुझाव की स्वीकृति के लिए मांग पेश करेगा तथा विभिन्न राजनैतिक पार्टियों से भी इस सुझाव के समर्थन के लिए सहयोग प्राप्त करेगा।

सराहनीय !

लखनऊ से प्राप्त एक सूचना में बताया गया है कि राज्य आबकारी मंत्रालय ने गांधी-शताब्दी वर्ष के कारण अगले वित्तीय वर्ष के दौरान उत्तर प्रदेश में न कोई नया शराब का लाइसेन्स दिया जायगा तथा न शराब की दूकान खोलने का ही कोई लाइसेन्स दिया जायगा।

'नाफेन' संवाद समिति की सूचना के अनुसार उत्तर प्रदेश सरकार ने यह भी निश्चय किया है कि गांधी-शताब्दी-समारोह के दिनों में मद्यनिषेध के दिनों की संख्या नहीं बढ़ायी जायगी। सामान्यतया इस प्रदेश में मंगलवार को शराब की बिक्री पर प्रतिबन्ध है।

गांधी-शताब्दी वर्ष १९६८-६९

गांधी-विनोबा के ग्राम-स्वराज्य का संदेश गाँव-गाँव, घर-घर
पहुँचाने के लिए निम्न सामग्री का उपयोग कीजिए :

पुस्तकें—

१. **जनता का राज :** लेखक—श्री मनमोहन चौधरी, पृष्ठ ६२, मूल्य २५ पैसे

२. **Freedom for the Masses :** लेखक—श्री मनमोहन चौधरी : 'जनता का राज' का अनुवाद, पृष्ठ ७६, मूल्य २५ पैसे

३. **शांति-सेना परिचय :** लेखक—श्री नारायण देसाई, पृष्ठ ११८, मूल्य ७५ पैसे

४. **हत्या एक आकार की :** लेखक—श्री ललित सहगल, पृष्ठ ९६, मूल्य ३ रु० ५० पैसे

५. **A Great Society of Small Communities :** ले० सुगत दासगुप्ता, पृष्ठ ७८, मूल्य १० रु०

फोल्डर—

१. गांधी : गाँव और ग्रामदान
२. गांधी : गाँव और शांति
३. ग्रामदान : क्यों और कैसे ?
४. ग्रामदान : क्या और क्यों ?
५. ग्रामदान के बाद क्या ?
६. ग्रामसभा का गठन और कार्य
७. गाँव-गाँव में खादी
८. सुलभ ग्रामदान
९. देखिए : ग्रामदान के कुछ नमूने
१०. गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम

पोस्टर—

१. गांधी ने चाहा था : सच्चा स्वराज्य
२. गांधी ने चाहा था : स्वावलम्बन
३. गांधी ने चाहा था : अहिंसक समाज
४. ग्रामदान से क्या होगा ?
५. गांधी जन्म-शताब्दी और सर्वोदय-पर्व

प्रदेश के सर्वोदय-संगठनों और गांधी जन्म-शताब्दी समितियों से सम्पर्क करके
यह सामग्री हजारों-लाखों की तादाद में प्रकाशित, वितरित कराने का प्रयत्न करना चाहिए।

शताब्दी-समिति की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति, टुंकलिया भवन,
कुन्दीगरों का भैरु, जयपुर—३ (राजस्थान) द्वारा प्रसारित।

भूदान-यज्ञ ३०-१२-'६८ रजिस्टर्ड नम्बर एल. ३५४ [पहले से डाकव्यय दिये बिना भेजने की स्वीकृति प्राप्त] लाइसेन्स नम्बर ए ३४
www.vinoba.in

बिहार में स्वीकृत चुनाव आचार-संहिता

पटना, २५ दिसम्बर। श्री जयप्रकाश नारायण के सुझाव पर बिहार के विभिन्न राजनैतिक दलों ने आगामी मध्यावधि चुनाव के संदर्भ में कार्यान्वित करने के लिए एक सात-सूत्री आचार-संहिता स्वीकृत की है।

गत २३ दिसम्बर को इस नगर में राजनीतिक दलों के नेताओं की एक बैठक जयप्रकाशजी द्वारा प्रस्तावित आचार-संहिता पर विचार करने के लिए हुई थी। बैठक में उपस्थित कांग्रेस, प्रजा-सोशलिस्ट पार्टी, लोकतांत्रिक कांग्रेस दल, भारतीय जनसंघ, भारतीय साम्यवादी दल, मार्क्सवादी साम्यवादी दल, भारतीय क्रान्ति दल तथा जनता पार्टी के प्रतिनिधियों ने प्रस्तावित आचार-संहिता पर गहराई से विचार किया और उसे कुछ संशोधनों के साथ आम राय से स्वीकार किया।

स्वीकृत आचार-संहिता इस प्रकार है :

(१) दूसरे पक्ष की आलोचना उसके उद्देश्य, नीति, कार्यक्रम तथा उसके द्वारा किये गये कार्यों को लेकर करें। किसी पक्ष के उम्मीदवार या उसके अन्य किसी सदस्य के निजी जीवन को लेकर आलोचना न करें। व्यक्तिगत आक्षेप भी ऐसे आरोपों के आधार पर न करें, जो सिद्ध न हो चुके हों।

(२) प्रचार के सिलसिले में जान-बूझकर झूठे वादे न करें।

(३) वोट प्राप्त करने के लिए गलत और निन्दनीय तरीकों का आश्रय न लें। जैसे, मतदाताओं को अपने पक्ष में करने के लिए डराना-धमकाना, रिश्वत देना, शराब पिलाना, जात-पाँत के आधार पर वोट माँगना या बोगस वोट देना-दिलाना गलत और निन्दनीय है।

(४) विभिन्न जातियों, धर्मों, वर्गों, भाषाओं और प्रान्तों के लोगों के बीच घृणा पैदा करनेवाली या हिंसक भावना उभारनेवाली कोई बात न करें।

(४) विचार-प्रचार और आचार में दूसरे की स्वतंत्रता में बाधा न पहुँचायें। जैसे, किसी पक्ष के सभा-जुलूस आदि को भंग करने-कराने का प्रयास करना, या उसके किसी और काम में रुकावट डालना अनुचित है।

(६) किसी प्रकार की हिंसा और अशांति का वातावरण न बनायें।

(७) सोलह साल से कम उम्र के बच्चों का उपयोग चुनाव-प्रचार में कतई न करें।

दुनिया भर के लोग एक हैं

'बड़ा दिन' के अवसर पर विनोबाजी का उद्बोधन

पटना, २५ दिसम्बर। आज सायंकाल ४ बजे विनोबाजी के पटना पहुँचने पर गांधी-संग्रहालय में पटना के प्रबुद्ध नागरिकों ने भावभीना स्वागत किया। पटना नगर-निगम के भूतपूर्व नगरपौर श्री रजनधारी प्रसाद सिंह ने पटना जिलादान के कार्य के लिए अपना भरपूर सहयोग देने की घोषणा की तथा पटना के नागरिकों की ओर से विनोबाजी का हार्दिक स्वागत किया।

स्वागत-समारोह में उद्गार प्रकट करते हुए विनोबाजी ने कहा कि आज का दिन बहुत मंगलमय माना जाता है। यह ईसामसीह का जन्म-दिन है। दुनिया का कोई देश नहीं जहाँ यह दिन न मनाया जाता हो। क्या किया ईसामसीह ने ? वे एक ऐसी बात कह गये, जिसे दुनिया के व्यवहारवेत्ता अव्यावहारिक मानते हैं। ईसा ने कहा—"दुश्मन को प्यार करो, उसे प्रेम से जीतो।"

यह बहुत बड़ी बात है। चाहे दुनिया गलत रास्ते पर जाय, पर मैं सच्चाई के रास्ते पर ही रहूँगा, गलत रास्ते पर नहीं जाऊँगा।

'हमें पड़ोसी को उतना ही प्यार करना है, जितना हम अपने को करते हैं।' हम अपने इस कार्य में अकेले नहीं हैं, दुनिया भर में भले लोग फैले हुए हैं। वे सब एक हैं, अनन्त हैं और हमारे साथ हैं।०

श्री राजकिशोर साहु का देहावसान

पटना, २१ दिसम्बर। बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के अध्यक्ष श्री राजकिशोर प्रसाद साहु का आज एक बजे दिन में सर्वोदयग्राम, मुजफ्फरपुर में देहान्त हो गया। वे ६२ वर्ष के थे। वे अपने पीछे अपनी विधवा के अलावा दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ छोड़ गये हैं।

श्री साहु लगभग एक साल से कैंसर से पीड़ित थे।

श्री साहु को विद्यार्थी-जीवन से ही रचनात्मक कार्यों में रुचि थी। उन्होंने बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के अनेक उत्तरदायित्व-पूर्ण पदों पर काम किया। सन् १९६७ में वे संघ के अध्यक्ष चुने गये। इसके पूर्व वे कई वर्षों तक संघ के सचिव रह चुके थे।

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।

"भूदान-यज्ञ" ३० दिसम्बर, '६८ के अंक का परिशिष्ट

www.vinoba.in

विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन् अनातुरम् । — ऋग्वेद

इस गाँव में स्वस्थ और परिपुष्ट विश्व का दर्शन हो!

इस अंक में

ठन-ठन•••खन-खन की साँठ-गाँठ

नारद-मोह

चोर की सजा

मधुग्रा : ग्रामदान की एक मिसाल

गेहूँ की पिछाही बोग्राई

विद्यार्थियों का रचनात्मक कार्य

मतदाताग्रों से

३० दिसम्बर, '६८

वर्ष ३, अंक १०] [१८ पैसे

ठन-ठन•••खन खन की साँठ-गाँठ

कल रात को एक ग्रजीब सपना ग्राया। यों तो सपने ग्रकसर दिखाई पड़ते हैं, लेकिन बहुत कम ऐसे होते हैं, जो जगने पर भी ग्रच्छी तरह याद रहते हों। लेकिन कल रातवाला सपना तो लगता है कि ग्रब भी ग्राँखों के सामने ज्यों-का-त्यों नाच रहा है :

"चारों तरफ धुन्ध-सी छायी हुई है। हम ग्रपने गाँव से बाहर खेत की ग्रोर जा रहे हैं। रास्ते में घास का एक लम्बा-चौड़ा मैदान है, जिसमें बहुत-सी भैंसें चर रही हैं। लेकिन चरवाहा एक भी नहीं है। चरवाहों की जगह छोटी-बड़ी बहुत-सी बाँस की लाठियाँ भैंसों के पीछे-पीछे घूम रही हैं। उनके छोटे-छोटे, पतले-पतले पाँव ग्रौर हाथ उग ग्राये हैं। उनके हिलने-डुलने पर 'ठन-ठन' की ग्रावाज होती है ग्रौर भैंसें बीच-बीच में पागुर करती हुई हरी-हरी घास चरती जा रही हैं।

"चुनाव की चहल-पहल के दिन हैं। हम दो-तीन साथियों के साथ चुनाव-चर्चा में मशगूल ग्रपनी पगडण्डी पर जा रहे हैं। तभी कुछ ग्रजीब-सी ठन-ठन•••खन-खन•••की ग्रावाज सुनाई पड़ती है। हम चौंककर मैदान की ग्रोर देखते हैं, जिधर से ग्रावाज ग्रा रही है। मैदान में जो कुछ दिखाई देता है वह बड़ा ही विचित्र है! हमारे पाँव ठिठक जाते हैं। बड़े गौर से हम सभी देखने-सुनने लगते हैं।

"मैदान के बीचों-बीच एक ग्रजीब शक्ल की सफेद भैंस दिखाई देती है। (सफेद भैंस सपने में दिखाई दे सकती है, ग्राप मानें या न मानें।) उसकी देह पूरी तरह चौकोर है। उस पर लिखा हुग्रा है—*'मध्यावधि चुनाव'*। सिर झुकाये वह भैंस पागुर कर रही है ग्रौर उसके सामने रुपयों की एक थैली खड़ी है! कितनी ग्रजीब बात है कि लाठियों की तरह उसके भी पतली-पतली टाँगें ग्रौर पतले-पतले हाथ निकल ग्राये हैं!

"धातु के रुपयों-पैसोंवाली खन-खन•••की ग्रावाज में थैली भैंस की ग्रोर इशारा करके बार-बार कहती है—*ग्रब की यह हमारी रहेगी।* ग्रौर कई लाठियाँ एकसाथ ठन-ठन-सी ग्रावाज में कहती हैं—*चल हट, यह हमारी रही है, ग्रौर हमारी ही रहेगी।*

"फिर तो इसी बात पर दोनों की लड़ाई ठन जाती है। ठन-ठन•••खन-खन की ग्रावाजें जोरों से सुनाई पड़ती हैं। लाठी-थैली, दोनों एक-दूसरे पर वार करते जा रहे हैं।

"तभी ग्रचानक भैंस चुपके-से दूसरी ग्रोर पाँव बढ़ाने लगती है। लेकिन भैंस के एक-दो कदम ग्रागे बढ़ते ही लाठी-थैली की लड़ाई थम जाती है। तुरन्त ही थैली की गर्दन में बँधी रस्सी→

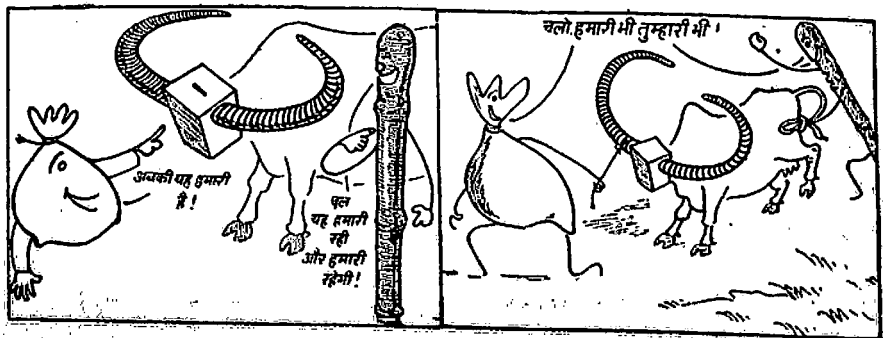

नारद-मोह

www.vinoba.in

हरिकिशुन की फैलायी अफवाह ने गाँव के कई लोगों के मन में यह लोभ पैदा कर दिया था कि ग्रामसभा का अध्यक्ष हमें ही चुना जाय। हरिकिशुन ने कई लोगों के कान में यह बात भी डाल दी थी कि 'जयनारायण और बलिराम पाँड़े वगैरह रामधनी बाबू से मिलकर ग्रामदान के बहाने माल मारना चाहते हैं। कलियुग है भाई, रुपया इस जमाने का मूलमंत्र है। पंडित की पूजा से लेकर पाकेटमार के पेशे तक का एक ही काम है रुपये हासिल करना।'

और यह बात इस प्रकार कही गयी थी कि मन के अन्दर-वाला चोर धीरे-धीरे प्रकट होने लगा था। इसलिए पूर्णिमा के दिन जब गाँव की सभा बैठी तो ग्रामदान के कागज पर हस्ताक्षर करनेवाले दिन का जोश दूसरा ही रूप ले चुका था। ग्रामदान के अगुवा लोगों का कहना था कि हरिहर काका को ही अध्यक्ष बनाया जाय। बात उनको बहुत कुछ सही भी थी, क्योंकि हरिहर काका 'बेदाग' आदमी हैं। गाँव के छोटे-से लेकर बड़े तक, सब उन पर भरोसा करते हैं। कठिन-से-कठिन मामले में भी हरिहर काका की सूझ-बूझ काम देती है, लेकिन हरिकिशुन खुद ही हरिजन टोले में तरह-तरह की बातें बनाकर उनका अगुवा बन बैठा था। इसलिए हरिजन-टोले का मुखिया हरिकिशुन को अध्यक्ष बनाना चाहता था। उधर ठाकुर-टोले के लोग बाबू विश्वनाथ राय को अध्यक्ष बनाने पर उतारू थे।... और ये तो खुली बातें थीं। भीतर-भीतर तो और भी न जाने कितनों के मन में बात पक रही थी कि मौका नहीं चूकना है।

बलिराम पाँड़े को गाँव की इस तनातनी का अन्दाज मिल गया था, इसीलिए उन्होंने पड़ोसी गाँव के रामधनी बाबू को भी सभा में बुला लिया था।

गाँव के प्राइमरी स्कूल पर सभा की तैयारी थी। बैठने के लिए धान का पुआल बिखेर दिया गया था। जिन घरों में लालटेनें जलती थीं, उन घरों से माँगकर दिन में ही गाँव के कुछ लड़कों ने लालटेनें इकट्ठी कर ली थीं, और सबके शीशों को खूब अच्छी तरह कएडे की राख से साफ कर लिया था। इन सब कामों में गनेसू सबका सरदार बन गया था। जगत् नारायण को यह देखकर बड़ा ही ताज्जुब हो रहा था इन दिनों, कि शरारती गोबर गनेसू इधर काफी दिनों से सुधरता जा रहा है। उसे सभा बुलाने की जिम्मेदारी दे दीजिए, बैठक की जगह ठीक-ठाक करने को कह दीजिए, और भी कोई इसी तरह का काम कह दीजिए, झटपट लड़कों का एक गोल बनाकर काम में जुट जाता है। शायद इस प्रकार से उसके अन्दर आगे-आगे सबका ध्यान खींचनेवाले काम करने की भावना को एक नयी दिशा मिल गयी है, इसलिए आदतें बदलती जा रही हैं।

बैठक में करीब-करीब गाँव के सभी लोग आ गये थे। अधेड़ और बूढ़ी औरतें भी एक ओर आड़ में बैठी थीं, और लड़के तो गाँवभर के इकट्ठा हो गये थे। गाँव की सभा हो या सत्यनारायण की कथा हो, लड़कों के लिए यह एक विशेष दिलचस्पी की बात होती है। वे स्कूल के छोटे से मैदान में 'लुक छिपौवल' खेल रहे थे।

सभा में सबसे पहले बलिराम पाँड़े ने कहा कि "रामधनी बाबू हमारे सौभाग्य से आये हुए हैं। इनके गाँव का भी ग्रामदान हो गया है। ग्रामसभा भी बन चुकी है, इसलिए हमें इनके अनुभव की बातें भी जान लेनी चाहिए।"

लेकिन बीच में ही हरिकिशुन बोल उठा, "झटपट काम की बात करके छुट्टी दीजिए पाँड़ेजी, काम-काज का दिन ठहरा, तड़के सबेरे ही सबको जगना पड़ता है।" बात तो हरिकिशुन ने काम-काज की की थी, लेकिन मंशा यह थी कि कहीं रामधनी बाबू की बातों से उसका पासा ही न पलट जाय। इसीलिए पहले से सोची हुई योजना के मुताबिक हरिकिशुन ने प्रस्ताव पेश कर दिया, "मेरी राय में ग्रामदान की ग्रामसभा में सबसे पिछड़े लोगों को आगे लाना चाहिए। तभी तो गांधी-विनोबा की बतायी राह पर हम चल सकेंगे।"

रामधनी बाबू ने समझ लिया कि किस प्रकार की चाल चली है—हरिकिशुन ने, लेकिन बोले नहीं, सोचते रहे कि इस आदमी को ठीक राह पर लाने का क्या उपाय हो सकता है।

↳आगे बढ़कर भैंस की सींग में लिपट जाती है, और लिपटकर उसे आगे खींचने लगती है। एक लाठी की बाँह भैंस की पूँछ मरोड़कर आगे ढकेलने लगती है। और तब खन-खन... ठन-ठन... की मिली-जुली समझौतेवाली आवाज सुनाई देती है—*चलो, इस बार हमारी भी, तुम्हारी भी।* थोड़ी देर और खन-खन... ठन-ठन... की आवाज सुनाई देती है, और फिर तीनों धुन्ध में आँखों से ओझल हो जाती हैं। हम ठगे-ठगे-से खड़े-खड़े देखते रह जाते हैं!

"अजी, सोये ही रहोगे या उठोगे भी?" श्रीमतीजी रजाई खींचती हुई जगाती हैं।

"अरे, हाँ, आज वोट देने जाना है न!" मैं झटपट उठकर तैयार हो रहा हूँ। मन में हलचल मची हुई है कि कहीं चुनाव की भैंस को हमारे पहुँचने से पहले ही लाठी-थैली आपस में साँठ-गाँठ करके भगा न ले जायँ!•

www.vinoba.in

"तुम्हारी राय में किसको अध्यक्ष बनाया जाय, हरिकिशुन ?" जगतनारायण ने पूछा। "हरिजन-टोले के मुखिया बटेसर को। अगर हमें नया गाँव बनाना है, सबको समान बनाना है तो खुद को पीछे करके पीछेवालों को आगे करना होगा।" हरिकिशुन ने कहा। उसकी योजना यह थी कि सभा में इस तरह की बात कहकर वह हरिजन टोले का 'अपना' बन जायगा, फिर तो वे बेखटके उसको 'वोट' देंगे। उसकी चाल सफल भी हुई।

बटेसर ने कहा, "हम गँवार लोग क्या कर सकेंगे बाबू, मेरी राय में तो हरिकिशुन बाबू को ही ग्रामसभा का मुखिया बनाना चाहिए, आखिर गाँव में वही तो एक हैं, जिनकी पहुँच 'कोट-कचहरी' तक है, गाँव की भलाई उनसे ही होगी।"

"अरे, वाह रे बटेसर! तुम्हें भी गाँव की पंचायत में बढ़-चढ़कर बोलने की हिम्मत हो गयी। गाँव का भला अब तुम करोगे या हरिकिशुन—कचहरी का दलाल!" रामप्यारे सिंह ने ललकारते हुए कहा, "मेरी राय आप लोग मानें, और ठाकुर विश्वनाथ राय को अध्यक्ष बनायें। राज-काज का धन्धा 'राज-काज' को समझनेवाला ही कर सकता है, हर कोई नहीं। और यह ग्रामसभा का काम है तो आखिर एक छोटा-मोटा राज-काज ही।"

"यह नहीं हो सकता, कभी नहीं। अब हम जमींदारी नहीं लौटने देंगे। ग्रामदान इसलिए नहीं किया है कि जहाँ हैं वहाँ से भी पीछे जायँ।" हरिकिशुन सहित उसकी तरफदारी करनेवाले लोगों ने जोश में आकर कहा।

"तो हम भी लुच्चे-लफंगों की नहीं चलने देंगे।" ठाकुर-वाले समूह के लोगों ने चुनौती दी।

हल्ला-गुल्ला और जोर-शोर की बातें सुनकर लड़के खेल बन्द करके सभा में बैठे लोगों की चारों ओर सहमकर खड़े हो गये थे। औरतें अपनी-अपनी बातें बन्द कर सभा की ओर कान लगाये थीं।

"भइया, ग्रामदान किया है, तो एक-दूसरे पर भरोसा करने के लिए, एक-दूसरे का सहारा लेकर मिलजुलकर काम करने के लिए, ताकि गाँव के सब लोगों का भला हो। अगर हम आपस में लड़ेंगे, तो हमारी हालत में क्या फर्क पड़ेगा?" हरिहर काका ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "अगर दंगल ही करना है तो ग्रामदान के कागज को कौड़े में डालकर फूंक दो, और फिर मजे से महाभारत रचाओ, देशभर में यही हो रहा है, तुम क्यों पीछे रहो?" काका की बातें सुनकर सन्नाटा छा गया। जाहिर था कि काका ने ये बातें दुःखी होकर कही हैं, नहीं तो काका को जल्दी नाराज होते किसीने नहीं देखा।

"ग्रामदान एक बार कर दिया, पैर आगे बढ़ा दिये, तो अब पीछे तो नहीं हटना है काका, लेकिन अध्यक्ष के चुनाव को लेकर सबके मन में जो चोर समा गया है, उसे कैसे भगाया जाय?" सभा में सबसे कम बोलनेवाले मनसुख ने कहा।

"गाँव का काम पूरे गाँव की एक राय से होगा तभी गाँव की भलाई हो सकेगी, इतनी बात तय है। लेकिन जबतक हम यह सोचेंगे कि अध्यक्ष-मंत्री बनकर अपना निजी लाभ उठायेंगे, तो मन का यह चोर गाँव में कुछ होने नहीं देगा। सब एक-दूसरे पर शंका करेंगे, एक-दूसरे की टाँग पकड़कर पीछे की ओर खीचेंगे।... यह भी समझ लेना चाहिए कि गाँव के जो भी काम होंगे, वे गाँव की पूरी सभा बुलाकर उसमें सबकी राय मिलने पर ही होंगे। गाँव के सभी आदमी बराबर की हैसियत से ग्रामसभा के सदस्य माने जायेंगे।... और बारी-बारी से सबको जिम्मेदारी के काम करने का अवसर दिया जायगा। इतनी बातें हमने अपने गाँव में तय की हैं, अगर आप लोगों को भी अच्छी लगें तो इन पर विचार करें।" रामधनी बाबू ने कहा।

"और सरकार से जो रुपये मिलनेवाले हैं, उसे भी क्या सबको बराबर-बराबर बाटेंगे?" बटेसर ने पूछा।

"कैसा रुपया? अरे भाई, सरकार के पास कहाँ इतना रुपया है कि हमें बाँटती फिरे। अबतक देश भर में सत्तर हजार से अधिक ही ग्रामदान हो चुके हैं। इतने गाँवों को कहाँ से रुपया मिलेगा? सरकार के पास तो खुद ही रुपया नहीं है कि वह अपनी योजनाएँ चला सके।" रामधनी बाबू ने कहा।

"लेकिन, हरिकिशुन बाबू ने तो...!" बटेसर बात पूरी नहीं कर पाया था कि तभी हरिहर काका बोल पड़े, "तो, यह सब हरिकिशुन यानी 'नारद' भगवान का मायाजाल है! तभी तो कहूँ कि अचानक गाँव में यह क्या होड़ मच गयी। 'लक्ष्मी' के चलते तो देवगण भी आपस में जूझ पड़े थे, लेकिन वहाँ साक्षात् 'लक्ष्मी' थीं, यहाँ उनकी कल्पना भर है।"

हरिकिशुन सहम गया। गाँव के लोगों में फिर से एक नयी भावना पैदा होने लगी। लेकिन फिर भी सवाल टेढ़ा था कि अध्यक्ष कौन बने? इसका फैसला कौन करे? कैसे करे?

(अध्यक्ष का चुनाव : अगले अंक में पढ़ें)

★

चोर की सजा

प्रश्न : ग्रामसभा के किसी परिवार ने अपनी जमीन ग्रामसभा या ग्राम-परिवार को बेची, परन्तु रात्रि को जमीन बेचनेवाले परिवारवाले के यहाँ चोरी हो गयी। वह परिवार अपनी जमीन का अधिकार छोड़ना नहीं चाहता है। तो ग्रामसभा उसके साथ कैसे फैसला करेगी ?

विनोबा : चोरी ग्रामदान के पहले हुई है या बाद में ? अगर पहले हुई है तो उसका उपाय बताने की जिम्मेवारी बाबा पर नहीं आती। अगर ग्रामदान के बाद हुई होगी तो सवाल यह आयेगा कि ग्रामदान तो कागज पर था, वह अमल में आया था या नहीं ? यानी क्या भूमिहीनों को जमीन दी गयी थी ? ४० वाँ हिस्सा ग्रामसभा को दिया गया था ? यह सारा हो चुका हो तो ग्रामदान हुआ, ऐसा माना जायेगा। नहीं तो एक संकल्प-पत्र हुआ। शादी का संकल्प हुआ था, इतने में दो में से एक मर गया। तो अब क्या किया जाय ? समझना चाहिए कि कागज पर आये हुए ग्रामदान वास्तव में आये हैं, ऐसा मानकर मैं जवाब दे रहा हूँ।

फिर सवाल आयेगा कि चोरी किसने की, बाहर के मनुष्य ने या गाँव के अन्दर के। अगर अन्दर के मनुष्य ने की हो और वह पकड़ा गया है, ऐसा मानकर चलें; अगर न पकड़ा गया हो तो गाँववाले सावधान बनेंगे और कहेंगे कि हमारे गाँव में चोरी होती है तो हमें सावधान बनना होगा और बारी-बारी से रात को जगना होगा, और जो चोरी हो चुकी है उसके लिए ग्रामसभा कहेगी कि इसके लिए पुलिस के पास जाने की जरूरत नहीं। जिसके घर चोरी हुई है, उसका निर्वाह हो सके इतनी मदद ग्रामसभा उसको दे देगी। अगर वह मनुष्य पकड़ा गया है तो उसे कहेंगे कि 'भाई, तुम्हें चोरी करने की क्यों जरूरत पड़ी ? तुम्हें जिस चीज की जरूरत थी, ग्रामसभा के पास जाकर माँगना चाहिए था। ग्रामसभा तुमको मदद करने की कोशिश करती। इसलिए भैया, तुमने चोरी की यह ठीक नहीं किया। लेकिन अभी हम तुमको माफ करते हैं। और तुमने जिस माल की चोरी की थी उसको वापस दे दो तो वह हम मालिक के पास पहुँचा देंगे।' यों कहकर उसको थोड़ा इनाम दे देते, ताकि उसकी जरूरत पूरी हो।

अब इसके आगे अगर सवाल पूछेंगे कि किसीने किसी एक मनुष्य को कतल किया तो ग्रामसभा क्या करेगी ? तो यह अपराध का मामला हुआ, इसलिए ग्राम में पुलिस जायेगी। तो मानना होगा कि सरकार का गाँव में इतना प्रवेश हुआ और ग्रामदानी गाँव को उतना आक्रमण सहन करना होगा। यह नहीं कि पुलिस को ग्रामदानी गाँव में आने का अधिकार ही नहीं, भले कतल ही की हो। यह हो सकता है कि मेरे लड़के की कतल किसीने की और उसके लिए मुझे कोर्ट में बुलाया गया तो कोर्ट में मैं कह सकता हूँ कि इसे माफ कर दीजिए, मुझे केस करना नहीं। तो इसका असर पड़ेगा। मैं कह सकता हूँ कि कानून के मुताबिक उसको दण्ड दिया जा सकता है यह अलग बात है, लेकिन मैं चाहता हूँ कि इसे माफ कर दिया जाय।

भूमि-समस्या का हल

प्रश्न : पाँच प्रतिशत जमीन से भूमिहीनों की समस्या हल हो सकेगी ? यदि हाँ तो कैसे ? और ना, तो दूसरा क्या उपाय है ?

विनोबा : हम सिर्फ पाँच प्रतिशत जमीन लेते हैं, ऐसी बात नहीं। मान लीजिए, किसीके पास सौ एकड़ जमीन है और उसने पाँच एकड़ जमीन दे दी। यानी बीसवाँ हिस्सा दे दिया। बाकी जो पन्चानब्बे एकड़ जमीन उसके पास बची, उसके उत्पादन का चालीसवाँ हिस्सा भी वह ग्रामसभा के लिए देगा। मुनाफे का चालीसवाँ हिस्सा नहीं। अपनी आमदनी का चालीसवाँ हिस्सा देगा। फिर वह अगर जमीन बेचना चाहे तो ग्रामसभा के द्वारा अपनी जमीन वह बेच सकेगा, क्योंकि जमीन की मिलकियत उसने ग्रामसभा में मिला दी है। ग्रामसभा उसकी जमीन की कीमत तय करके जमीन बेचने की इजाजत उसको देगी। फिर जो जमीन खरीदेगा उससे ग्रामसभा कहेगी कि अब तुम्हारे पास यह जमीन आयी है, उसका बीसवाँ हिस्सा भूमिहीनों के लिए देना होगा। इस तरह धीरे-धीरे समानता की प्रक्रिया चलेगी। तो, पाँच प्रतिशत जमीन देना, यह एक फच्चर है। आखिर गाँव के सब लोग परिवार की तरह रहें, प्रेम से रहें, सब लोगों का ज़िम्मा उठायें, यह ग्रामदान का स्वरूप है। तो फिर आपके प्रश्न का उत्तर मैंने यह दिया कि आपका मसला पाँच प्रतिशत से समाप्त नहीं हुआ।

दूसरी बात, जिसको आप पाँच एकड़ जमीन देंगे उसके लिए वह जमीन पर्याप्त नहीं होगी। उससे अधिक उसे कुछ देना होगा, ग्रामोद्योग खड़े करने होंगे।

[गाँव के प्रमुख लोगों के साथ की चर्चा से, रामानुजगंज, २१-११-'६८]

मधुआ : ग्रामदान की एक मिसाल

मधुआ गाँव का ग्रामदान सन् १९६३ में हुआ। तब से लेकर आज तक इस गाँव में अनेक परिवर्तन हुए। लोगों के चरित्र में तथा उनकी जिन्दगी में बहुत बड़ा अन्तर पड़ा है।

यह मधुआ मुंगेर जिले के झाझा ब्लाक का छोटा-सा, १५ परिवारों का गाँव है। इसमें हरिजन और पासवान जाति के लोग रहते हैं। इनके पास २०० एकड़ जमीन है, लेकिन खेती नाममात्र की ही होती थी। क्योंकि ये लोग डकैती और चोरी करके अपनी जीविका चलाते थे। यहाँ के पुरुषों का ज्यादा समय या तो जंगलों में बितता था या जेलों में। जेल में ही इस गाँव के प्रमुख व्यक्ति श्री धरम पासवान ने विनोबाजी का नाम सुना और ग्रामदान की बात सुनी। उन्हें ग्रामदान की बात बहुत पसन्द आयी। उनके दिमाग में ग्रामदान की बात चलती रही। जब वे जेल से छूटे तो उन्होंने गाँववालों से ग्रामदान की और विनोबाजी की बात बतायी। उन्होंने कहा कि अब चोरी और डकैती का काम छोड़कर विनोबाजी के बताये मार्ग पर चलना चाहिए, और इसलिए गाँव का ग्रामदान किया जाय। चूँकि वे गाँव के सरदार ही ठहरे, गाँव के लोग उनका आदर करते थे, इसलिए सबने तय किया कि चोरी और डकैती का काम वे छोड़ देंगे।

ग्रामीण ग्रामदान के कार्यकर्ताओं से मिले और गाँव का ग्रामदान कर दिया। गाँव का ग्रामदान कर देना तो उनके लिए बहुत सरल था, लेकिन ईमानदारी का जीवन बिताना कठिन हो गया। उनसे उस क्षेत्र की पुलिस को ५०० रुपये महीने कमाई होती थी, वह बन्द हो गयी। पुलिस उनको परेशान करने लगी। पुलिस कहती थी, चाहे जैसे हो, हमें रुपये मिलने चाहिए, और रुपये न मिलने पर उन्हें पीटती थी। इस गाँव के लोगों ने तो यहाँ तक कहा कि चोरी की योजना करने और संगठन करने में पुलिस उनकी मदद करती थी।

सन् १९६४ में धरम पासवान की मृत्यु हो गयी। गाँववालों ने पुलिस को रुपया देना पूर्ण रूप से बन्द कर दिया।

ग्रामदान कर देने मात्र से ही तो उनका पेट भरनेवाला नहीं था। चोरी, डकैती बन्द हुई यानी कमाई बन्द हुई; यद्यपि इनके पास जमीन ज्यादा थी, लेकिन सबकी सब टाँड (अन-उपजाऊ), पथरीली। कहीं इन्हें मजदूरी नहीं मिलती थी, क्योंकि ये लोग पहले चोर थे, इन पर विश्वास कौन करता! अब पुलिसवाले फिर से इन्हें चोरी के पेशे में वापस आ जाने के लिए समझाने लगे। लेकिन पुलिस के लाख समझाने और न मानने पर धमकाने के बावजूद लोगों ने उनकी बात नहीं मानी। वे अपनी बात पर अड़े रहे।

इस परिस्थिति में बिहार की ग्राम-निर्माण समिति ने भूमि-सुधार के लिए ३०० रुपये की मदद की। इससे ग्रामीणों में थोड़ा उत्साह आया। उन्होंने भूमि-सुधार का काम शुरू किया। ३० एकड़ भूमि खेती के लायक तैयार हुई। उन्होंने ५ मील सड़क का भी निर्माण किया।

सन् १९६६ के सूखे के समय 'फूड फार वर्क' और 'आक्स-फेम' की तरफ से इन्हें भूमि-सुधार तथा सड़क-निर्माण के लिए सहायता मिली। इन कार्यक्रमों के कारण मधुआ के लोगों का उत्साह बढ़ा और तब उन्हें लगा कि नयी जिन्दगी का नया मार्ग मिल गया। सरकार के विकास-प्रयत्नों से यह गाँव २० वर्षों तक अछूता रहा है। ग्रामीणों के लिए प्रशासन का मतलब था पुलिस, पुलिस का अत्याचार और शोषण। परन्तु जब उन्हें नया कार्यक्रम मिला तो उनको रोजी तो मिली ही, लोगों में भाईचारे का भी विकास हुआ। उनका भरोसा बढ़ा और इस बात का अनुभव हुआ कि उनके कल्याण और विकास के बारे में सोचनेवाले लोग भी हैं।

इस गाँव के इन कार्यक्रमों का और इस क्षेत्र के अन्य ग्रामदानी गाँवों का प्रभाव सरकारी लोगों पर पड़ा और उनका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। सन् १९६६ में पहली बार सरकार की ओर से स्वास्थ्य-विभाग का अधिकारी इस क्षेत्र में सूखा-सहायता के लिए आया। वह गाँवों में घूम-घूमकर 'कठिन श्रम-योजना' के लिए प्रचार कर रहा था। वह ग्रामदान के महत्त्व को मानता नहीं था और कार्यकर्ताओं की उपेक्षा भी करता था। इसका नतीजा यह हुआ कि उसे सफलता नहीं मिली। फिर तो उसने इस क्षेत्र में लोगों को समझाना ही छोड़ दिया। जब उसको ग्रामदानी कार्यकर्ता की मदद मिली, तब उसके सहयोग से तीन महीने में ५३ कुएँ खोदे गये। इस कार्यक्रम में संसोपा के कार्यकर्ताओं का भी सहकार मिला।

ग्रामदान की घोषणा के बाद ही इस गाँव में ग्रामसभा का संगठन हो गया था। परन्तु दो वर्ष तक वे भ्रम और दुविधा में पड़े रहे। इनकी दुविधा तब बढ़ जाती थी जब सरकारी अधिकारी इन पर अपराध का झूठा आरोप लगाते रहते थे। इनके आरोपों से बचने के लिए ग्रामीणों ने आपस में बातचीत

www.vinoba.in

की और यह तय किया कि इन झूठे आरोपों से बचने का एकमात्र उपाय है ग्रामसभा को मजबूत बनायें।

ग्रामदानी कार्यकर्ता ने उन्हें यह सलाह दी कि 'तुम ईमानदार रहो, मिलकर सोचो और मिलकर काम करो तो तुम सभी प्रतिकूलताओं का सामना अच्छी तरह कर सकोगे।' इस प्रकार की सलाह से उनका मनोबल मजबूत हुआ।

ग्रामीणों ने अपनी जमीन का बीसवां हिस्सा जो कुल ८ एकड़ होता है, भूमिहीनों में और कम जमीनवालों में वितरित कर दिया है। ग्रामसभा के निर्णय के अनुसार जमीन के उत्पादन का चालीसवाँ भाग ग्रामकोष में इकट्ठा किया जाता है। सन् १९६७ में इसकी शुरुआत की गयी थी। उस वर्ष में १९५ रु० का ग्रामकोष इकट्ठा हुआ था।

ग्रामसभा ने १०० एकड़ में भूमि-सुधार का काम शुरू किया है, जिसका ४० प्रतिशत काम अक्तूबर '६८ तक पूरा हो गया था। ग्रामसभा ने सिंचाई के लिए एक 'आहर' तैयार किया है, जिससे ३० एकड़ भूमि की सिंचाई हो जाती है। दूसरा 'आहर' बन रहा है, जिससे ५० एकड़ भूमि की सिंचाई हो सकेगी। एक और योजना सोची गयी है, जिससे इस गाँव की सिंचाई पूरी हो जायेगी, और जो ज्यादा पानी होगा, वह पड़ोसी गाँव को भी देंगे।

इस गाँव के लोगों ने अपने गाँव के लिए जो किया वह तो किया ही, ग्रामदान-आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया। इनके ही पुरुषार्थ का परिणाम है कि जमुई अनुमण्डल में झाझा प्रखण्ड का दान पहले हुआ। इस गाँव के ३० लोगों की टोली ने पड़ोस के गाँवों में ग्रामदान-प्राप्ति का काम किया और पड़ोस के प्रखण्ड चकाई में भी ग्रामदान के काम से गये और उस प्रखण्ड का दान पूरा हुआ।

ग्रामदान में वे नयी आशा की किरणें देखने लगे हैं और उन्हें नयी जिन्दगी का रास्ता दिखाई पड़ने लगा है। नवनिर्माण कठिन परिश्रम और त्याग से ही होता है। वह इस गाँव में भरपूर है। इसी तरह के प्रयत्न से पूरे देश में स्वतंत्रता, समता और भाईचारा कायम हो सकेगा। मधुआ जैसे ग्रामदानी गाँवों ने इसकी शुरुआत कर दी है।

—शशिकान्त मिश्र

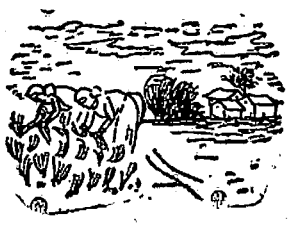

खेत-खलिहान

गेहूँ की पिछाही बोआई

अगर आपके पास सिंचाई की सुविधा है तो इस मौसम में गेहूँ की देर से बोआई कर सकते हैं। आप गेहूँ की बोआई गन्ना, आलू, तोरिया, फूल गोभी, गाजर या शलजम की फसलों को लेने के बाद कर सकते हैं।

खेत की तैयारी : सबसे पहले फसल की कटाई करने से एक सप्ताह पहले खेत में पानी दे दीजिए। यह गेहूँ के लिए पलेवा का काम देगा। इसके बाद एक जोताई मिट्टी पलटनेवाले हल से और दूसरी उथली जोताई कर दीजिए।

पिछाही किस्में : पिछाही बोआई के लिए नीचे बतायी किस्में बहुत उपयुक्त रहती हैं : सोनोरा ६४, शरबती सोनोरा और सोनालिका। इन बौनी किस्मों को आप दिसम्बर के मध्य से लेकर जनवरी के मध्य तक बो सकते हैं। एक अन्य बौनी किस्म सफेद लर्मा तथा लम्बी किस्म एनपी ८३० दिसम्बर के मध्य से जनवरी के पहले सप्ताह तक बोयी जा सकती है।

बीज दर और फासला : बोने के लिए प्रति हैक्टर १२५ किलोग्राम बीज लें। इस बीज को बोआई से पहले रात भर पानी में भिगोये रखें। बोआई के लिए बनायी कतारों के बीच १५ से १८ सेंटीमीटर का फासला रखें। बीज को ४-५ सेंटीमीटर की गहराई पर बोइए। इससे ज्यादा गहराई पर बोने से पैदावार गिर जायेगी। बोआई के बाद खेत में अच्छी सड़ी हुई गोबर-कूड़े की खाद की एक पतली-सी परत बिछा दीजिए।

रोपाई : आपका खेत अगर जनवरी तक तैयार होनेवाला है तो तीन सप्ताह पहले आप पौध तैयार कर सकते हैं। नरसरी में पौधों के बीच ५ सेंटीमीटर और कतारों के बीच १० सेंटीमीटर का फासला रखना चाहिए। नरसरी में पौधे घने न उगायें, क्योंकि इससे पौधे दुबले और लम्बे हो जायेंगे। स्वस्थ पौध को बाद में खेत में रोप दीजिए।

सिंचाई : बोआई के तीन-चार सप्ताह बाद पहली सिंचाई कीजिए। दोमट और भारी जमीनों में आप तीन सिंचाइयाँ कीजिए—पिछाही कल्ले निकलते समय, फूल आते समय तथा दूधिया अवस्था में। दूधिया अवस्था में सिंचाई उस दिन करें, जब कि तेज हवा न चल रही हो। रेतीली जमीन में दो-तीन अतिरिक्त सिंचाई की जरूरत और पड़ेगी। मार्च के महीने में तापमान बढ़ने पर सिंचाई करना बहुत जरूरी है। बौनी किस्मों की सिंचाई मार्च के शुरू में ही करना ज्यादा अच्छा रहता है।

—'कृषि-सूचना सेवा' से

www.vinoba.in

विद्यार्थियों का रचनात्मक कार्य

अप्रैल से जून और सितम्बर से दिसम्बर तक श्रीलंका में एक विशेष चहल-पहल रहती है। रेलगाड़ी से या बसों से, विद्यार्थी हजारों की तादाद में किसी छोटे-से स्टेशन पर उतरकर खड़े हो जाते हैं। हर स्कूल के विद्यार्थियों के हाथ में उनके स्कूल का झंडा होता है। इन विद्यार्थियों का स्वागत करने के लिए ग्रामीण किसान पहले से स्टेशन पर मौजूद रहते हैं। गांव के मुखिया के हाथ में श्रीलंका का राष्ट्रीय झंडा रहता है।

जैसे ही ट्रेन या बस से विद्यार्थी उतरते हैं, वे अपने स्कूल का झंडा गांव के मुखिया के हाथ में थमा देते हैं और मुखिया राष्ट्रीय झंडा स्कूल की टोली के नेता के हाथ में थमाकर कहता है : "राष्ट्र के भविष्य की जिम्मेदारी तुम्हारे हाथ में है।"

और विद्यार्थियों की यह टोली ग्रामीणों के पीछे-पीछे चल पड़ती है। शिक्षक भी साथ होते हैं। गांव के खेतों में पहुँचकर झंडों को खेत की मेड़ पर गाड़ दिया जाता है। इस प्रकार से ये 'खेत विद्यालय' शुरू हो जाते हैं। विद्यार्थी धान के खेतों की निराई का काम शुरू कर देते हैं। और लाखों हाथ मिलकर आनन-फानन में धान के खेतों से घास को निकालकर बाहर फेंक देते हैं।

श्रीलंका के किसान आमतौर पर धान की दो फसलें तो लेते ही हैं, अतः रोप तैयार करना, धान रोपना, और काटना यही सब करने में घास निकालने के लिए समय ही नहीं मिल पाता है। धान के खेत में घास इस देश की बहुत बड़ी समस्या थी। धान के खेतों में रासायनिक खादों का उपयोग करने से धान के पौधों के साथ-साथ घास भी बहुत तेजी से बढ़ती थी। नतीजा यह होता था कि यह घास धान के पौधे को दबा लेती थी। श्रीलंका की सरकार का ध्यान इस समस्या की तरफ गया और स्कूलों में पड़े लाखों बेकार हाथ धान के खेतों में पहुँच गये। धान के खेतों से घास गायब होने लगी। घासरहित धान के खेतों में जब रासायनिक खादों का प्रयोग शुरू किया गया तो कहीं-कहीं तो पैदावार तीन गुनी बढ़ गयी। सन् १९६६ से यहीं की सरकार ने इस कार्यक्रम को बहुत गम्भीरता से उठाया है। नतीजा यह हुआ है कि धान की पैदावार पूरे देश में २५ लाख बुशल बढ़ गयी है। यह धान दूसरे देशों से ५ करोड़ डालर खर्च करके लेना पड़ता था। इस देश में ११ लाख एकड़ जमीन में धान की खेती होती है। यदि पूरी जमीन की औसत पैदावार ६५ बुशल प्रति एकड़ हो जाय तो अन्न की पूर्ति अच्छी तरह से हो सकती है।

'खेत विद्यालय' की योजना के अन्तर्गत विद्यार्थियों ने जहाँ धान के खेतों में से घास निकालने का काम किया है, वहाँ यदि किसान पहले ३८ बुशल प्रति एकड़ की उम्मीद करता था तो वहाँ अब ८० बुशल तक प्रति एकड़ पैदा होने लगा है। इस प्रतिफल के कारण किसान, विद्यार्थी, और सरकार, तीनों में इस काम के लिए जबरदस्त उत्साह निर्माण हुआ है।

इस कार्यक्रम से पैदावार बढ़ने के साथ-साथ और भी बहुत-से लाभ हुए हैं। जब विद्यार्थी खेतों में काम करने के लिए पहुँचते हैं तो उन्हें अपने देश को जानने का मौका मिलता है और उन लोगों से प्रत्यक्ष सम्पर्क होता है जो देशभर के लिए खाना पैदा करने का काम करते हैं।

शहर के बहुत-से बच्चों ने धान के खेत देखे भी नहीं हैं, जब वे धान के कीचड़ भरे खेतों में घुसकर ग्रामीणों के साथ-साथ घास निकालने या धान रोपने का काम करते हैं, तो उनको जानकारी होती है कि ग्रामीणों का जीवन कैसा है।

इस कार्यक्रम से ग्रामीणों की जिन्दगी में भी एक नया उत्साह तथा श्रम-प्रतिष्ठा का भाव पैदा हुआ है। इस प्रकार से काम के माध्यम से शहरी और देहाती जीवन का संयोग हो रहा है।

— नरेन्द्र

ग्रामदान-प्रगति के आँकड़े

प्रदेश	ग्रामदान	प्रखण्डदान	जिलादान
बिहार	३२,९८८	३२४	६
उत्तर प्रदेश	१०,१३६	५७	२
तमिलनाड	५,३०२	५०	१
मध्यप्रदेश	४,१५२	१८	१
अन्य प्रदेशों में	२४,४९३	६९	—
भारत में कुल :	७७,०७१	५१८	१०

www.vinoba.in

मतदाताओं से

फरवरी में मध्यावधि चुनाव होनेवाला है। आप किसे वोट देंगे ? क्या आप यह नहीं कर सकते कि इस चुनाव में दिल से दल को निकाल दें ? दल, जाति, धर्म आदि के नारों से सरकार का क्या सम्बन्ध है ? अच्छे लोग चुने जायेंगे तो अच्छी सरकार बनेगी। इसलिए आप सबसे अच्छे उम्मीदवार को वोट दें, चाहे वह किसी दल, जाति या धर्म का हो। अपने और सरकार के बीच से दल को हटाइए। अच्छे लोगों की सरकार बनने दीजिए। गाँव में कोई किसी उम्मीदवार के पक्ष या विपक्ष में 'कन्वेसिंग' न करे। पूरा गाँव मिलकर तय करे या सबको अपनी मर्जी के अनुसार वोट देने की छूट दे दे।

- दलगत राजनीति अपनी विधायक शक्ति खो चुकी है।
- यह राजनीति देश को तोड़ने का कारण बन रही है।
- इस राजनीति से पूँजाशाही, नौकरशाही, और नेताशाही को बढ़ावा मिल रहा है।

अच्छा उम्मीदवार कौन ?

जो सच्चरित्र और ईमानदार हो, दल-बदल न करता हो, अपने क्षेत्र का सेवा करता हो, जो अपने बँटाईदार को बेदखल न करता हो, हमेशा खादी पहनता हो, ग्रामदान में शरीक हुआ हो, तथा जो भूमि-व्यवस्था, बेकारी, खादी-ग्रामोद्योग, नशाबन्दी आदि पर प्रगतिशील विचार रखता हो। सोचिए, आप ऐसे आदमी को वोट देंगे या दल का नाम लेकर, पैसे का लोभ देकर, डंडा दिखाकर, जाति या धर्म का पक्षपात जगाकर वोट माँगनेवाले, बुराइयों से भरे हुए उम्मीदवार को ?

चुनाव में और क्या-क्या करना चाहिए ?

पहले से दबाव, लोभ या भय के कारण वोट का वादा मत कीजिए। सोचिए अच्छा उम्मीदवार कौन है ? चुनाव के कारण अपने गाँव की एकता मत टूटने दीजिए। उम्मीदवारों से कहिए कि वे एक दिन, एक समय, गाँव में आयें और एक सभा में अपनी-अपनी बात कहें। उनको बात सुनकर गाँव या तो एक राय होकर वोट दे, या हरएक का अपनी मर्जी के अनुसार वोट देने को स्वतंत्र छोड़ दे। कोई किसी पर किसी तरह का दबाव न डाले।

अपने बच्चों को चुनाव के प्रचार में शरीक होने से बचाइए। दलों को उनका इस्तेमाल मत करने दीजिए। उम्मीदवारों और उनके साथियों से कहिए कि वे केवल अपनी बात कहें, अपना विचार समझायें। अपने विरोधी की भद्दी निन्दा न करें। आप खुद किसी उम्मीदवार का या किसी जाति, धर्म की निन्दा सुनने से नम्रतापूर्वक इनकार कर दीजिए।

हर ब्लाक, और हो सके तो गाँव-गाँव में, कुछ निष्पक्ष सज्जनों को लेकर 'निरीक्षण-समितियाँ' कायम कीजिए, जो देखती रहें कि चुनाव सही हो, निष्पक्ष हो, और दलों द्वारा मानी हुई मर्यादाओं का पालन हो।

सच्चे लोकतंत्र की शक्ति जनता में है, न कि दलों में। लोकशक्ति से लोकतंत्र गाँव-गाँव में आयेगा। **ग्रामदान** लोकशक्ति का आधार है।

'गाँव की बात' : वार्षिक चन्दा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे
सम्पादक : राममूर्ति : सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१